अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - ''विष्णुदत्त राकेश : व्यक्तित्व और कृतित्व'' पृ. 1 - 13

1.1 **व्यक्ति परिचय**

1.1.1 जन्म तिथि तथा जन्म स्थान

1.1.2 माता-पिता

1.1.3 गुरु

1.1.4 मित्र परिवार

1.1.5 शिक्षा

1.1.6 नौकरी

1.1.7 सम्मान एवं पुरस्कार

1.1.8 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

1.1.8.1 बाह्य पक्ष

1.1.8.1.1 हुलिया

1.1.8.1.2 वेशभूषा

1.1.8.2 अंतरंग पक्ष

1.1.8.2.1 सदाचारी

1.1.8.2.2 ज्ञानी

1.1.8.2.3 पौराणिक भक्ति और योग

1.1.8.2.4 आस्थावादी

1.1.8.2.5 दार्शनिक

1.1.8.2.6 संत पंथ को आदर्श मानना

1.1.8.2.7 संत साहित्य के साथ शोध-सामग्री

1.1.8.2.7.1 उदासी पंथ

1.1.8.2.7.2 निर्मल पंथ के पुरस्कर्ता

1.1.8.2.7.3 गुसाई पंथ के समर्थक

1.1.8.2.7.4 गरीबदासी पंथ के प्रचारक

1.1.8.2.7.5 समता पंथ के भी समर्थक

1.1.8.2.8 संत मत और उनकी साधना का निकट का परिचय

1.1.8.2.9 व्याकरण व्यथा

1.1.8.2.10 अवधूत परंपरा का विकास

1.1.8.2.11 वैदिक कर्मकांड के विरोधी

1.2 कृतित्व

1.2.1 कविता

1.2.2 शोध-कार्य

1.2.3 समीक्षा

1.2.4 प्राप्त सामग्री

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - ''विष्णुदत्त राकेश का 'नभग' खंडकाव्य : विषयगत विवेचन'' **पृ. 14 - 41**

प्रास्ताविक

2.1 कथावस्तु

2.1.1 प्रथम सर्ग

2.1.2 द्वितीय सर्ग

2.1.3 तृतीय सर्ग

2.1.4 चतुर्थ सर्ग

2.1.5 पंचम सर्ग

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय - "'नभग' खंडकाव्य में आधुनिकता बोध : शिक्षा क्षेत्र के संबंध में" पृ. 42 - 78

प्रास्ताविक

3.1 शिक्षा शब्द का अर्थ

3.1.1 शिक्षा शब्द की परिभाषा

3.1.1.1 निपक्षपाती शिक्षा

3.1.1.2 राजप्रभाव से मुक्त शिक्षा

3.1.1.3 शिक्षालयों की स्वायत्तता

3.1.1.4 शिक्षक का महत्त्व

3.1.1.5 आदर्श शिक्षक

3.1.1.6 शिक्षा में स्वभाषा का महत्त्व

3.1.1.7 शिक्षा नीति में भ्रष्टाचार

3.1.1.8 परिवर्तनवादी गुरुकुल

3.1.1.9 नई मुक्त शिक्षा पद्धति का स्वीकार

3.1.1.10 नारी शिक्षा

3.1.1.11 धर्म से संबंधित शिक्षा

3.1.1.12 शिक्षा से वंचित सर्वसामान्य

3.1.1.13 शिक्षालयों में प्रदूषित माहौल

3.1.1.14 सर्वशिक्षा अभियान

3.1.1.15 रचनात्मक शिक्षा की अनिवार्यता

3.1.1.16 शिक्षा से ज्ञानशक्ति के साथ-साथ कर्म शक्ति भी बढ़ जाती है

3.1.1.17 गुरुकुल का आचार्य द्विजेतर बालक को करना

3.1.1.18 सदोष शिक्षा पद्धति

3.1.1.19 शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन की अपेक्षा

3.1.1.20 शिक्षा आत्मोन्नति की खान है

3.1.1.21 शिक्षा मुक्ति का मार्ग है

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - '' 'नभग' खंडकाव्य में आधुनिकता बोध : नारी जीवन के संदर्भ में'' पृ. 79 - 96

प्रास्ताविक

4.1 आधुनिक जीवन पद्धति : एक विवेचन

4.1.1 विवेच्य खंडकाव्य में आधुनिक नारी जीवन

4.1.1.1 प्रेरणारूपी नारी

4.1.1.2 ऋषिका नारी

4.1.1.3 कवयित्री घोषा

4.1.1.4 गृहस्थाश्रम को माननेवाली नारी

4.1.1.5 प्रतिभासंपन्न नारी

4.1.1.6 सक्रिय नारी

निष्कर्ष

पंचम अध्याय - '' 'नभग' खंडकाव्य में आधुनिकता बोध : विविध समस्याओं के संदर्भ में'' पृ. 97 - 119

प्रास्ताविक

5.1 समस्या का अर्थ

5.1.1 वर्णव्यवस्था की समस्या

5.1.2 बौद्धिक बल की समस्या

5.1.3 भाई-बिरादरी की समस्या

5.1.4 आर्थिक समस्या

5.1.5 शैक्षिक अनुशासन की समस्या

5.1.6 शिक्षा में राजनीति की समस्या

5.1.7 वृद्धों की समस्या

5.1.8 स्त्री-पुरुष समानता की समस्या

5.1.9 नारी शिक्षा की समस्या

5.1.10 पर्यावरण की समस्या

5.1.11 प्रतिभावान व्यक्ति की समस्या

5.1.12 न्याय व्यवस्था की समस्या

5.1.13 बच्चों की स्वास्थ्य की समस्या

निष्कर्ष

उपसंहार **पृ. 120 - 127**

संदर्भ ग्रंथ सूची **पृ. 128 - 134**